August - 2021 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE - 271

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना

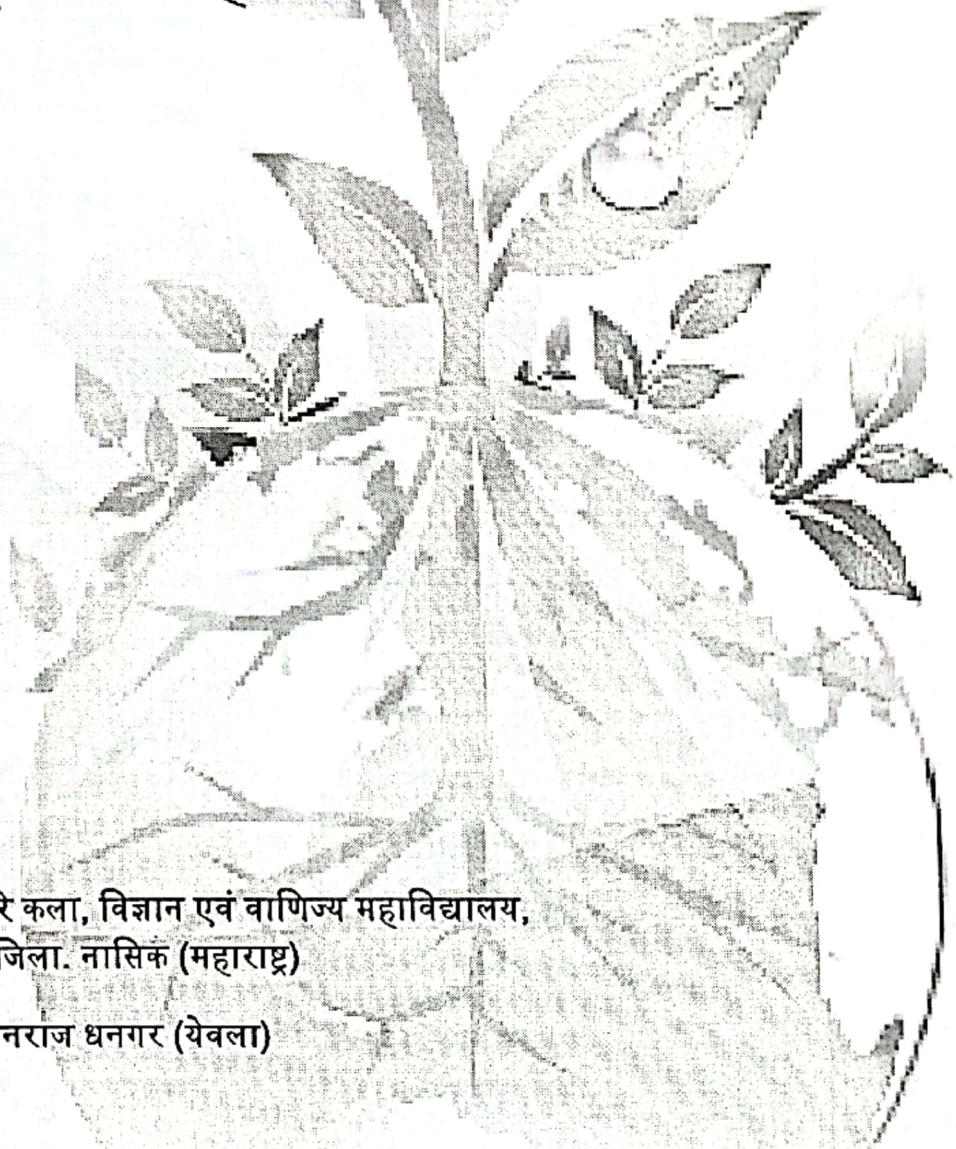

विशेषांक संपादक
प्रा. रवींद्र ठाकरे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
समाजश्री प्रशांदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
नामपूर, तह. सटाणा, जिला. नासिक (महाराष्ट्र)

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर (येवला)

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATIO

Scanned with CamScanner

[illegible]

[illegible]	शीर्षक	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
1	[illegible]	[illegible]	[illegible]
2	[illegible]	[illegible]	[illegible]
3	[illegible]	[illegible]	[illegible]
4	[illegible]	[illegible]	[illegible]
5	[illegible]	[illegible]	[illegible]
6	[illegible]	[illegible]	[illegible]
7	[illegible]	[illegible]	[illegible]
8	[illegible]	[illegible]	[illegible]
9	[illegible]	[illegible]	[illegible]
10	[illegible]	[illegible]	[illegible]
11	[illegible]	[illegible]	[illegible]
12	[illegible]	[illegible]	[illegible]
13	[illegible]	[illegible]	[illegible]
14	[illegible]	[illegible]	[illegible]
15	[illegible]	[illegible]	[illegible]
16	[illegible]	[illegible]	[illegible]
17	[illegible]	[illegible]	[illegible]
18	[illegible] में पर्यावरण चेतना	[illegible]	[illegible]
19	कवि [illegible] के काव्य में पर्यावरण चेतना	[illegible]	[illegible]
20	हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. [illegible]	[illegible]
21	[illegible] महाकाव्य में पर्यावरण चेतना	[illegible]	[illegible]
22	हिंदी काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. [illegible]	[illegible]
23	[illegible] उपन्यास में पर्यावरण चेतना	[illegible]	[illegible]
24	हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना	[illegible]	[illegible]
25	हिंदी काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. [illegible]	[illegible]
25	[illegible] पर्यावरण संरक्षण का आदर्श पाठ	डॉ. [illegible]	[illegible]
27	[illegible] के कथा साहित्य में पर्यावरण चेतना	श्रीमती [illegible]	[illegible]
28	पर्यावरण के प्रहरी संत कवि	[illegible]	[illegible]
29	कवि [illegible] प्रकृति और [illegible]	दिलीपकुमार पाटील, डॉ. [illegible]	[illegible]
30	बाल कविताओं में पर्यावरण चिंतन	डॉ. [illegible]	[illegible]
31	कामायनी में पर्यावरण चेतना	[illegible]	[illegible]
32	विनोद चन्द्र पाण्डेय की कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. [illegible]	[illegible]
33	तालाब हमारे प्रेरणास्रोत	डॉ. [illegible]	[illegible]
34	पर्यावरण की उपयोगिता एवं पर्यावरण संरक्षण : एक अध्ययन	डॉ. [illegible], डॉ. [illegible]	[illegible]
35	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. भरत [illegible]	[illegible]
36	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. [illegible]	[illegible]

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue – 271 : हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
August - 2021

राष्ट्रकवि बृजेश सिंह की ग़ज़लों में पर्यावरण चेतना

प्रा. रवींद्र पुंजाराम ठाकरे
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
समाजाश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविदयालय,
नामपुर, तह –बागलाण, जिला- नाशिक (महाराष्ट्र)
Email- ravipthakare@ gmail.com
दूरभाष :-9822916518

डॉ. अनिता पोपटराव नेरे
शोधनिर्देशक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग, श्रीमती पुष्पाताई हिरे महिला महाविदयालय,
मालेगांव कैम्प, तह-मालेगांव, जिला- नाशिक (महाराष्ट्र)

भूमिका :-

मनुष्य और प्रकृति का अनादिकाल से घनिष्ठ संबध रहा है ।सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य ने प्रकृति की गोद में आँखें खोली है ।प्रकृति की अनंत संपदाओं का उपयोग कर अपना विकास किया है ।प्रकृति ने उसे जीवनदायिनी शुध्द वायु, सूर्य का प्रखर प्रकाश, नदी एवं झरनों का अविरल प्रवाहमान स्वच्छ जल प्रदान किया। उसका मन वहलाने के लिए पेड़ -पौधे , तरह -तरह के पंछी और जनावर दिये । उसके लिए मेघो में जल भर दिया । आदिमानव प्रकृति प्रेमी था । उसने अन्य जीवों की तरह अपने पर्यावरण को जैसा पाया वैसा ही रहने दिया। उसने सूर्य, वायु, अग्नि, पानी, भूमि, वन आदि प्राकृतिक पदार्थों की देवता मानकर पूजा की । परंतु विकास की प्रक्रिया और लिप्सा ने मानव को वर्वर पशु वना दिया । उसने प्राकृतिक पदार्थों पर विजय पाने की लालसा के कारण प्रकृति का दोहन प्रारम्भ कर दिया। यही से पर्यावरण का असंतुलन और ऱ्हास आरम्भ हो गया। आज इक्कीसवीं शताब्दी में स्थिति यह हो चुकी है कि मानव ने धरती, आकाश, समुद्र एवं अंतरिक्ष को एक सीमा तक अपने नियंत्रण में कर लिया है । 'भोगो और फेंक दो' की संस्कृति ने पर्यावरण को प्रदूषित किया और चराचर जीव सृष्टि को विनाश की कागार पर खड़ा कर दिया । इसीकारण आज अपने अस्तित्व को वचाने के लिए और सम्पूर्ण प्रकृति के संवर्धन एवं जीव जगत की रक्षा करने हेतु पर्यावरण संरक्षण करना मनुष्य का आद्यकर्तव्य वन गया है । आज अगर मनुष्य ने पर्यावरण रक्षण के लिए उपाय नहीं किये तो आनेवाली सदियाँ उसे माफ नहीं करेगी ।

राष्ट्रकवि डॉ.बृजेश सिंह की ग़ज़लों में पर्यावरण-चेतना :-

राष्ट्रकवि डॉ.बृजेश सिंह हिंदी साहित्य के मूर्धन्य ग़ज़लकार हैं । उन्होंने ग़ज़लों के मध्यम से वर्तमान समय में व्याप्त समस्याओं को न केवल उजागर किया है अपितु उन पर उचित समाधान वताकर समाज का पथ प्रदर्शन भी किया है । पर्यावरण संरक्षण राष्ट्रकवि वृजेश सिंह का आत्मीय विषय है । पर्यावरण -प्रदूषण और पर्यावरण का ऱ्हास देखकर कवि आहात हो जाते हैं । पर्यावरण -प्रदूषण आज देश के लिए ही नहीं अपितु पूरे विश्व के लिए खतरे का विषय वन गया है । इसीलिए डॉ. वृजेश सिंह ने पर्यावरण -प्रदूषण का निराकरण करने हेतु पर्यावरण संरक्षण-संवर्धन को मुख्य प्रतिपाद्य बनाया है । पर्यावरण संवर्धन के लिए प्रलम्व ग़ज़ल 'समाधान' का सृजन करके महाग़ज़लकार का कीर्तिमान स्थापित किया है । प्रख्यात आलोचक डॉ.विनय कुमार पाठक लिखते हैं -"आपने 300से अधिक ग़ज़लें पर्यावरण को केंद्रित करके लिखीं । पर्यावरण पर जितने परिणाम

Scanned with CamScanner

में डॉ. बृजेश सिंह द्वारा ग़ज़लें लिखी गई हैं ,किसी कवि व ग़ज़लकार की लेखनी मेरे देखने में नहीं आई। इसका कारण भी है, डॉ. बृजेश सिंह जाने माने पर्यावरणविद् हैं। उन्हें पर्यावरण की चिंता प्रारम्भ से रही है , जिसे वे केवल लिखकर नहीं , दिखाकर भी कार्यान्वित करते हैं। "(1)

'निष्कर्ष' डॉ. बृजेश सिंह का सन् 2009 में प्रकाशित प्रतिनिधि ग़ज़ल संग्रह है। इस संग्रह में समसामायिक समस्याओं को ब-खु-बी उजागर किया गया है। इस संग्रह की ग़ज़लों में देश प्रेम , समाज सेवा , पारिवारिक सौदार्य , भ्रष्टाचार , गंदी राजनीति , शासन की लापरवाही , बेरोजगारी , युवाओं का आक्रोश तथा पर्यावरण के ऱ्हास को मार्मिक शब्दों में चित्रित किया है। कवि पर्यावरण- प्रदूषण के साथ - साथसामजिक-प्रदूषणकोभीमिटानाचाहतेहैं -

"अवाम के शोषक , पोषक का स्वांग रचाते अक्सर,
बेशर्मियों का प्रदर्शन आपने सरेआम देखा होगा।
दौलत के दम पे सूनहरे हर्फ में इश्तहार देनेवाले कई,
' बृजेश 'शायद अखबारों में उनका छपा नाम देखा होगा॥"(2)

कवि बृजेश सिंह राष्ट्रीय चेतना के पुरोधा हैं। राष्ट्र प्रेम इनकी रचनाओं का प्राण तत्व है। कवि वतन की रखवाली करने के लिए नवयुवकों को इतिहास की याद दिलाते हैं। भारत माता को आजाद करने के लिए जिन शहीदों ने अपना सर्वस्व अर्पण किया, उनकी याद दिलाकर युवाओं को सचेत करना चाहते हैं , -

"पहना शहीदों ने बासंती चोला फाँसी के फंदे चूम के ,
वतन के मुहब्बत से बढ़के कोई मुहब्बत नहीं होता।
' बृजेश ' वतन पे जाने कितनी जिंदगियां कुर्बान होती,
वतन के मुकद्दर से बढ़के कोई मुकद्दर नहीं होता॥"(3)

इस संग्रह में कवि ने आर्थिक, राजनीतिक , धार्मिक, सांस्कृतिक प्रदूषण को स्वच्छ करने की पुरजोर माँग की है।

'हकीकत' सन 2012 में प्रकाशित डॉ. बृजेश सिंह का महत्वपूर्ण ग़ज़ल संग्रह है। इन ग़ज़लों का अनुभूति पक्ष विशाल, विस्तृत और बेजोड़ है। कवि ने पर्यावरण विमर्श के साथ -साथ पारिवारिक विमर्श की स्थापना भी इस संग्रह में की है। आज मनुष्य परिवार जैसी महत्वपूर्ण संस्था से कट गया है। जिससे उसका ऱ्हास हो रहा है। परिवार में माँ, बाप , पति -पत्नी के साथ बेटियों की महत्ता को कवि ने नये रूप में उद्घाटित किया है -

"घर आँगन मलय-सा महकाती हैं बेटियाँ।
बाबुल के चमन को चहकाती हैं बेटियाँ॥
जननी -जनक को संकट में देख सहम जाती।
दुख-दर्द -जख्म पर मरहम लगाती हैं बेटियाँ॥"(4)

प्रकृति में पर्यावरण का मिजाज हवाओं के कारण बढ़ता है। जैसे हवा बहती है वैसे सृष्टि भी अपना रूप बदलती है। कहीं गर्म, कहीं सर्द तो कहीं पुलकित करनेवाला हवाओं का रवैया देखकर मन में उल्लास भर आता है। परंतु इस प्राण वायु का प्रदूषण देख कवि दुखी हो जाते हैं। सड़कों पर दौड़ती बेशुमार गाडियों से निकलने वाली दूषित गैस, कल -कारखानों से निकलने वाला धुआँ, खेती में फसलों पर होते जहरिलें कीटनाशकों का प्रयोग आदि हवाओं को प्रदूषित कर उसका रूप बिघाड़ रहे हैं। कवि वायु प्रदूषण को रोकने की गुहार लगते हैं-

"आदमी की थकन अक्सर मिटाती हैं हवाएँ।

Scanned with CamScanner

नख-शिख पुलकित कर जाती हैं हवाएँ॥
बवंडर बनना न अच्छा लगा, न लगेगा कभी।
मौसमों की कैद से बचने तड़पती हैं हवाएँ ॥"(5)

सृष्टि में नाना प्रकार के रहस्य विद्यमान है। प्रकृति बड़ी दयालु है। वह निस्वार्थ भाव से मनुष्य को सेवा देती रहती है। बादलों का बरसना , मौसम का बदलना, बिजलियाँ चमकना ,फूलो का खिलना, धरती पर कहीं जलजला तो कही ज्वालामुखी का धधकना आदि सब क्रियाकलाप मनुष्य को उबारने के लिए होते रहते हैं। परंतु मनुष्य बड़ा स्वार्थी प्राणी है। विकास की आंधी दौड़ में उसने प्रकृति का बेशुमार दोहन किया और प्रकृति के मूल रूप को बिघाड़ कर प्रदूषण फैला दिया। जिससे वह स्वयं विनाश के कगार पर खड़ा हो गया है। कवि लिखते हैं, कि कुदरत बड़ी दयालु है। वह मनुष्य को कठिनाई में जीने की राह दिखाती है। उसके सीने में कई राज पलते हैं जो मनुष्य को संयम सिखाते हैं, किंन्तु दुर्दैवी मनुष्य पर्यावरण की भाषा नही समजता -

" बड़ी-सी बड़ी कठिनाइयों में जीने की राह सुझाती।
'बृजेश' दयालु कुदरत का हम पर कुछ ऐसा करम होता है॥" (6)

'हालात-ए-वतन' सन 2012 में प्रकाशित डॉ. बृजेश सिंह का चर्चित ग़ज़ल संग्रह है। इस संग्रह में कवि ने वर्तमान समय में देश में व्याप्त समस्याओं को बेपर्दा किया है। सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ.विजय वेदालंकार इस संग्रह के संदर्भ में लिखते हैं,-"उन्होंने समाज, साहित्य, संस्कृति, सियासत, धर्म, इतिहास, राष्ट्रीयता, आतंकवाद, परिवार, दलित, किसान, पर्यावरण, जीवन-मृत्यु आदि बहुविध प्रश्नों को ग़ज़ल का विषय बनाया है। बृजेश सिंह ने पुराने की नई व्याख्या की है, नये को पुराने से जोड़ा है और पुराने नये दोनों को भविष्य के लिए उपयोगी सिध्द किया है।"(7)

जंगल प्रकृति का शृंगार है। वृक्ष पर्यावरण के संरक्षक है। जन्म से लेकर मृत्यु तक पेड़ मनुष्य का हमसफर बने रहते हैं। वह मनुष्य को फूल, फल,शीतल छाया प्रदान करते हैं। पर्यावरण में व्याप्त कार्बनडाय ऑक्साइड का शोषण करके शुध्द ऑक्सिन देते हैं। ओजन की परत को बनाये रखने में पेड़ो,जंगलों की अहम भूमिका हैं। विकास के लालच में मनुष्य ने वनों को उजाड़ कर वहाँ भयावह कारखाने बनाये हैं। जंगल में रहनेवाले आदिवासियों की जमीनें हड़पकर उनका शोषण किया जा रहा है। नक्सलवाद के कारण देश का सामाजिक प्रदूषण बढ़ रहा है। कवि अपनी व्यंग्यात्मक शैली द्वारा इस प्रदूषण को अधोरेखित करते हुए लिखते हैं -" सीधे -सादे वनवासी आज भी लंगोटी में।

नमक बदले चिरौंजी वाले साहूकार हो गये ॥
वनवासियों के शोषण का ये बुरा नतीजा कि।
नक्सलियों का वन क्षेत्रों पर अधिकार हो गये ॥"(8)

'यथार्थ ' बृजेश सिंह का सन् 2013 में प्रकाशित मार्मिक ग़ज़ल संग्रह है। इसमें कवि ने जीवन की वास्तविकता को प्रस्तुत करते हुए पर्यावरण की सर्वश्रेष्ठता का मुक्त कंठ से गान किया है।मनुष्य का जनम -मरण सब प्रकृति की गोद में होता है। पर्यावरण मनुष्य के जीवन-मरन का वास्तविक रंगमंच है। मनुष्य कितनी भी होशियारी कर ले परंतु कुदरत कभी किसी को माफ नहीं करती। कवि स्वार्थी मनुष्य को सावधान करते हुए लिखते हैं -

"कुदरत का हर शै के लिए तय अंजाम होता है।
अपना- अपना सबका निश्चित मुकाम होता है॥
कुदरत का करिश्मा खुद कुदरत ही जाने ' बृजेश '।
कभी पुरुषार्थी रुसवा सरेआम होता है ॥" (9)

Scanned with CamScanner

'जल-पर्यावरण-समाधान ' कवि बृजेश सिंह का ' समाधान ' नामक महाग़ज़ल से एक सौ चौदह ग़ज़लों को केवल जल-पर्यावरण पर केंद्रित गजलों को चुनकर संपादित किया गया अनूठा ग़ज़ल संग्रह है। जल प्रकृति के लिए एक अनूपम उपहार है। जल ही जीवन है । विश्व की सभी मानव सभ्यताओं पर जल का प्रभाव रहा है। भारत की सभ्यता भी नदियों से सम्पृक्त है । सिन्धु- घाटी, गंगा- घाटी, सोन, नर्मदा, बेलन-घाटी आदि सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे ही हुआ है । राष्ट्रकवि डॉ .बृजेश सिंह ने जल के महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखा हैं –

" जल पर्यावरण को खत्म करने की साजिश,
फक्त आदमी के वजूद को मानो मिटाना है ।
जल के सानिध्य में पलती रही है सभ्यताएँ,
पानी को पानी से ही नहाना है ॥
वेद शास्त्र सब जोर देकर कहते ' बृजेश '
जल से ही आई दुनिया, जल में ही समाना है ॥"(10)

जल का मानव जीवन में अनन्यसाधारण महत्व है । संसार का हर क्षेत्र जल के बिना सूना है । खाद्य विज्ञान, जल उद्योग, पीने के लिए, साफ -सफाई के लिए उपयुक्त जल, धर्म- दर्शन, साहित्य और राजनीति में भी जल का अपना अलग महत्व है। कृषि क्षेत्र की तो जल के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती ।जल के कारण ही तिसरे विश्व युध्द होने की संभावना है । इतना महत्वपूर्ण होने के बावजूद भी आदमी जल की बेशुमार लूट कर रहा है, बेवजह उसे बेकार तथा प्रदूषित कर रहा है । जल के प्रति आदमी की यह उपेक्षा कवि के मन में क्षोभ निर्माण करती है। वे लिखते हैं –

" कुदरत ने खोल दिया मानो अपना खजाना है,
अनमोल जल को धरती पर यूँ लुटाना है ।
जहाँ पानी वहाँ जल का मोल नहीं समझते हम,
निर्मम हो अनियंत्रित ढंग से जल बहाना है ।
जल पे कितनी जाने गई, कितनी ही जानी हैं,
जल के लिए विश्वयुध्द सोच मन थर्राना हैं ॥"(11)

इस प्रकार 'जल -पर्यावरण -समाधान' में राष्ट्रकवि डॉ.बृजेश सिंह ने जल और जीवन के विविध रूपों को बड़े सुंदर ढंग से व्याख्यायित किया है ।

'समाधान' राष्ट्रकवि बृजेश सिंह का प्रलम्ब ग़ज़ल संग्रह है । यह केवल , हिंदी, उर्दू, मराठी साहित्य का ही नहीं अपितु विश्व साहित्य का सबसे बड़ा ग़ज़ल संग्रह बन गया है । इस संग्रह की ग़ज़लों में छह हजार शेर सम्मिलित हैं । डॉ.विनय कुमार पाठक इस महाग़ज़ल के संदर्भ में लिखते हैं -"डॉ.बृजेश सिंह इस अर्थ में चर्चित होकर प्रतिष्ठित हो गए कि उन्होंने विश्व में सबसे लंबी छह हजार शेरों की ग़ज़ल लिखने का श्रेय प्राप्त किया है। यह महाग़ज़ल ' समाधान' शीर्षक से विकास संस्कृति पत्रिका में विगत दो वर्ष से सभी अंकों में प्रकाशित होती रही है । "(12)

'समाधान' पर्यावरण चेतना की गाथा है और राष्ट्रकवि बृजेश सिंह की कीर्ति का मीलस्तम्भ है। राष्ट्रकवि डॉ.बृजेश सिंह ने 'समाधान' संग्रह की ग़ज़लों में विस्तार से पर्यावरण -विमर्श की चर्चा की है । पर्यावरण - प्रदूषण का प्रभाव मानव जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ रहा है । पर्यावरण- प्रदूषण के कई कारण बताए जा सकते हैं , जिनमें रेडिओधर्मी पदार्थ, सभी प्रकार के कीटनाशक पदार्थ, खरपतवार नाशक दवा, अन्य प्रकार के

Scanned with CamScanner

वैषिले रसायन , ध्वनि -प्रदूषण , जल -प्रदूषण आदि आते हैं । वास्तव में पर्यावरण -प्रदूषण का मुख्य कारण मनुष्य की अदूरदर्शिता, भावी दुष्परिणामों के प्रति उपेक्षित दृष्टिकोण ही है । जिसके परिणाम स्वरूप पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या और भी गंभीर एवं भयावह होती जा रही है । राष्ट्रकवि डॉ.बृजेश सिंह मनुष्य को सचेत करते हुए लिखते हैं -,

"विकास की दौड़ में विनाश गले लगाना है ।
विपुल उत्पादन मोह में अन्न प्रदूषित करना है ॥
रासायनिक खाद खेतों में झोंक रहे कब से ।
निज सेहत को अपने ही हाथों कचूमर बनाना है ।
शुध्दता को तरसती आज इन्सानी जिंदगी ।
न शुध्द हवा न पानी न अन्न का दाना है ॥
जैविक खेती की ओर लोग फिर से बढ़ रहे ।
कम-से-कम अपने खाने हेतु अन्न उपजाना है ॥
बहुत देर बाद कुछ हद तक चेते हैं ' बृजेश '।
जरूरी जड़ों से जुड़ना पर्यावरण बचाना है ॥"(13)

आज मनुष्य को विकास की गति के साथ -साथ पर्यावरण संरक्षण की गति को बढ़ाना जरूरी हो गया है। ऐसा न करने पर हम विनाश की ओर खिंचते चले जाएंगे । अपनी जरूरतों पर अंकुश लगाकर भोगवादी और विलासी जीवनशैली को त्यागकर सीधा-सादा और सरल जीवन स्वीकारना होगा । बढ़ती आबादी को रोक कर विदेशी संस्कृति का अंधानुकरण त्याग ना होगा। नदी , पहाड़ , पर्वत , पेड़ , पौधे सबसे ईश्वरीय नाता जोड़ कर उनका संरक्षण करना होगा । वाहनों का सीमित उपयोग करके ओजोन पर्त का महाक्षरण बचाना होगा और करोड़ो की संख्या में पेड़ लगाकर इस धरा को हराभरा करना होगा, तब ही इस प्रदूषण रुपी राक्षस से लड़ा जा सकता है । कवि डॉ.बृजेश सिंह भारतीय समाज को प्रदूषण से लड़ने के लिए जागृत तो करते हैं साथ ही पर्यावरण संरक्षण के लिए ठोस कानून बनाने की अपील भी करते हैं - "प्रदूषण विरुध्द न केवल कानून लाना है।
प्रशासन का दायित्व याद भी करना है ॥
नदी जलाशय में प्रदूषण एक भयावह जुर्म ।
जितना अधिरोपित करें वो कम ही जुर्मना है॥"(14)

सारांश:-

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि, राष्ट्रकवि डॉ.बृजेश सिंह की ग़ज़लों में पर्यावरण चेतना सर्वत्र विद्यमान है । इनका ग़ज़ल संसार समकालीन समस्याओं का निर्भिक दस्तावेज है। सुप्रसिद्ध विचारक , समक्षक एवं कुलपति डॉ.ए .एस .झाड़गांवकर लिखते हैं -"समकालीन युग समस्याओं एवं संघर्षो का युग है । पूंजीवादी महानगरीय सभ्यता के प्रदूषित वातावरण में सर्वहारा वर्ग के लिए समाजवाद एक स्वप्न बनकर रह गया है । ऐसी विषम सामजिक, आर्थिक , परिस्थितियों से ग्रस्त युग में डॉ.बृजेश सिंह ने समय की आवाज को पहचाना और उसके दु:ख-दर्द को मुखरित किया है । "(15) नि:संदेह कहा जा सकता है कि, डॉ.बृजेश सिंह भारतीय सभ्यता और संस्कृति के उपासक तथा संरक्षक हैं। उनकी ग़ज़लों में विश्व कल्याण की कामना समाहित है। यह ग़ज़लें केवल भारतवर्ष ही नहीं अपितु समस्त विश्व में फैले पर्यावरण -प्रदूषण को मिटाने की गुहार लगाती है।डॉ.बृजेश सिंह की ग़ज़लों में ' वसुदैव कुटुम्बकम् ' का भाव निहित है ।

Scanned with CamScanner

संदर्भ :-

1. महासंग्राम समाधान मेंअभिव्यक्त चेतना, ले.डॉ.इंद्रनाथ सिंह, भूमिका से...
2. निष्कर्ष, डॉ.बृजेश सिंह, पृ.28
3. निष्कर्ष, डॉ.बृजेश सिंह, पृ.36
4. हकीकत, डॉ.बृजेश सिंह,07
5. हकीकत, डॉ.बृजेश सिंह, पृ.35
6. हकीकत, डॉ.बृजेश सिंह, पृ.38
7. हालात-ए-वतन, डॉ.बृजेश सिंह, पृ.90
8. हालात-ए-वतन, डॉ.बृजेश सिंह, पृ.42
9. यथार्थ , डॉ.बृजेश सिंह, पृ.55
10. जल -पर्यावरण -समाधान, डॉ.बृजेश सिंह, पृ.49
11. जल -पर्यावरण -समाधान, डॉ.बृजेश सिंह, पृ.67
12. महासंग्राम समाधान में अभिव्यक्त चेतना, ले.डॉ.इंद्रनाथ सिंह , भूमिका से
13. विकास संस्कृति, त्रैमासिक पत्रिका, अंक-20(अक्टू-नव-दिस -2011),पृ.43
14. विकास संस्कृति, त्रैमासिक पत्रिका, अंक-21(जन-फर-मार्च -2012),पृ.34
15. महासंग्राम समाधान में अभिव्यक्त चेतना, ले.डॉ .इंद्रनाथ सिंह , पृ.300

Scanned with CamScanner